International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

'कुमाँऊ मण्डल के बी.टी.सी. एव बी.एड शिक्षकों के आकांक्षा स्तर प्रभावशीलता, सुविधास्तर, स्वधारणा एवं कार्यात्मक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन'

डॉ०(श्रीमती) मीनाक्षी भटनागर[1], श्रीमती किरन परगाँई[2]

[1] पूर्व अध्यक्षा शिक्षा विभाग गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

2 शोध छात्रा मेवाड विश्वविद्यालय गंगरार चितौडगढ राजस्थान

शोध अध्ययन की पृष्ठभूमि – (Backgrounf of the Study)

सभी मानवीय कार्यकलापों की तरह शिक्षा में भी समाज की उदीयमान आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप परिवर्तन होते रहते हैं। मानव जीवन में जब नए लक्ष्य स्थापित होते हैं तो समाज की आकांक्षाएँ भी बदल जाती हैं। शिक्षा की अवधारणा में चाहे जो भी परिवर्तन हो, मानव–मुक्ति, स्वतन्त्रता और न्यायपूर्ण समाज की रचना इसका अन्तिम लक्ष्य रहा है तथा भविष्य में भी रहेगा। मानव मुक्ति और न्यासपूर्ण समाज की परिभाषाएं विभिन्न विचारधाराओं के सापेक्ष बदलती रही हैं जिसके कारण शिक्षा प्रक्रिया और प्रभाव क्षेत्र के स्वरूप में भी स्वाभाविक रूपान्तरण होता रहा है।

विश्व के बदलते परिप्रेक्ष्य और संक्रमणकालीन मूल्य विहीनता को देखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापकों के मूल्य, शिक्षण प्रभावशीलता, आकांक्षा स्तर आदि के परस्पर संबंधो की चर्चा ज्वलंत बनी हुई है।

यह सर्वविदित है कि मानव के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। अतः हमारी चिंतन प्रक्रिया के शैक्षिक निहितार्थो में शाश्वत मूल्य निश्चित रूप से विद्यमान होने चाहिए। शिक्षा के हर क्षेत्र में हमारी संस्कृति, संस्कार, सोच और चिन्तन प्रतिबिंबित होते हैं।

आधुनिक शिक्षा आज एक साथा दोहरे संकट से ग्रस्त है। जहां एक ओर उसकी सामाजिक प्रासंगिकता पर बड़े पैमाने पर सवाल उठाये जा रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ सभी प्रबुद्ध नागरिक जीवनमूल्यों के ह्रास के बारे में शिक्षक की भूमिका को सन्देह की दुष्टि से देखते हैं।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

राष्ट्र की अपनी संस्कृति और सभ्यता होती है। राष्ट्र की सांस्कृतिक सम्पदा शिक्षण संस्थाओं में ही सुरक्षित रहती है। ये शिक्षण संस्थाएं राष्ट्र की प्रहरी बनकर सत्त उसकी रक्षा में लगी रहती हैं। संस्थाएं अपनी शिक्षा से समाज को निरन्तर प्रभावित करती रहती हैं। वस्तुतः उस राष्ट्र के सांस्कृतिक वैशियट्य को वहाँ के शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से प्रतिनिधित्व मिलता है।

कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षक वर्ग पर सम्पूर्ण रूप से निर्भर करता है क्योंकि शिक्षक समाज के नागरिकों की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं और नागरिक राष्ट्र का निर्माण करते हैं, इसलिए शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता समझा जाता है। शिक्षण व्यवसाय को एक आदर्श व्यवसाय की संज्ञा दी गई है। शिक्षक वह धुरी है जिसके चारों ओर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली घूमती है। प्राचीन भारत में शिक्षक को अग्रणी स्थान प्राप्त था और शिक्षक अपने कार्य को जीवन का प्रमुख ध्येय समझते थे, परन्तु आज शिक्षण कार्य एक व्यवसाय मात्र रह गया है और जीविकोपार्उन इसका मूल उद्देश्य है।

यह आवश्यक नहीं है कि जितने भी व्यक्ति शिक्षण व्यवसाय से जुडे हैं, वह सभी इस धारणा से ओत–प्रोत हों कि शिक्षण क्रिया समाज की सबसे बड़ी सेवा है, बल्कि कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो कि अपने अभीष्ट लक्ष्य को न प्राप्त कर सकने की स्थिति में जीवन–निर्वाह हेतु इस व्यवसाय को अंगीकार कर लेते हैं। ऐसे ही शिक्षक प्रायः अपने कार्य में सफल एवं प्रभावपूर्ण नहीं होत हैं। वर्तमान समय में समस्त शिक्षा वैज्ञानिक शिक्षण में सुधार की आवश्यकता पर बल देते हैं, इसलिए इस सन्दर्भ में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जिनकी अध्यापन क्षेत्र में ही आगे बढ़ने की प्रवृत्ति हो।

''जन सामान्य तथा व्यावसायिक क्षेत्र में यह धारणा काफी महत्वपूर्ण बन गई है कि कोई भी शक्षिक कार्यक्रम तभी सफल है जबकि विद्यालय की कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा अच्छे ढंग से शिक्षण कार्य सम्पादित किया जाय''(रेयान,1960)।

उपर्युक्त सन्दर्भ में योग्य शिक्षकों के व्यक्तित्व के गुणों तथा विशेषताओं से परिचित होना आवश्यक है।

इस बात से प्रभावित होकर विगत दशकों में यह जानने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार के व्यक्तित्व वाले शिक्षक अच्छा और प्रभावशाली शिक्षण करते हैं। इन अध्ययनों से ऐसे अध्यापकों की पहचान हो जाय तो निश्चित रूप से छात्रों को अधिगम के लिए उत्प्रेरित किया जा सकता है। इन अध्ययनों से ऐसे अध्यापकों के व्यक्तित्व–तत्वों व विशेषताओं की जानकारी भी की जा सकती है जो कक्षा में अच्छा तथा प्रभावी शिक्षण कार्य सम्पादित नहीं कर पाते। फलस्वरूप छात्र अधिगम बहुत कम हो पाता है। यह भी देखने में

आता है कि शिक्षकों में अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक प्रवृत्ति नहीं पायी जाती है परिणामतःअनेक शैक्षिक समस्यायें यथा–शैक्षिक मूल्यों का ह्रास, शिक्षण स्तर का गिरना, छात्र अनुशासन की समस्या एवं विद्यालयीय अव्यवस्था देखने को मिलती हैं। वर्तमान समय में शिक्षा जगत की समस्यायें इतनी विशाल, बहुआयामी, जटिल तथा दिग्भ्रमित हैं कि इनके लिए व्यापक स्तर पर वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

प्रायः यह देखा जाता है कि शिक्षक के व्यवहार में कुछ ऐसी बातं या क्रिया–कलाप आ जाते हैं, जो छात्र हितकरी नहीं होते हैं। अतः शिक्षक व्यवहार का मूल्यांकन एवं अवलोकन करके उनके व्यवहार में उत्तम एवं उपयोगी परिवर्तन लाया जा सकता है। यदि शिक्षक की शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है तो वह इसमें रूचि लेगा और शिक्षार्थियों को समुचित रूप ये शिक्षित करने का प्रयास करेगा।

''शिक्षक का व्यक्तित्व'' कक्षा की परिस्थितियों में एक महत्वपूर्ण चर है।

कोठारी आयोग ने भी कहा है कि –'' भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में स्वरूप ग्रहण करता है''। हने का तात्पर्य यह है कि– शिक्षण के दौरान देश के भावी नागरिकों का सृजन होता है तथा उन पर अध्यापकों की नैतिकता, चरित्र, मूल्यों एवं अन्य कारकों का प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में प्रस्तुत अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उन कारकों की खोज गम्भीरतापूर्वक की जाये जो अध्यापन व्यवसाय की गरिमा को बनाये रखने में सहयोग प्रदान करते हैं तथा जिनके अनुपालन से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में सफलता प्राप्त कर समाज में अपना गौरवमय स्थान सुनिश्चित कर सके एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी महति भूमिका निभा स

शोध स्थापनः– उत्तराखण्ड एक पर्वतीय क्षेत्र है। इसमें दो मण्डल हैं कुमाँऊ तथा गढ़वाल मण्डल। उत्तराखण्ड का अधिकांश क्षेत्र पर्वतीय है और कुछ भाग मैदानी हैं। इस क्षेत्र में माध्यमिक तथा प्राथमिक स्तर के शिक्षार्थियों के वाछंनीय व्यवहार तथा पाठ्यक्रमीय अनुभवों के सम्प्रेषण हेतु दो प्रकार के शिक्षक शिक्षण की भूमिका निर्वहन कर रहे हैं।

प्रथम प्रकार के वे शिक्षक हैं जिन्होंने विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त कॉलेजो से प्रशिक्षण संस्थाओं से अध्यापक शिक्षा का प्रशिक्षिण प्राप्त किया है। ऐसे शिक्षकों को माध्यमिक स्तर पर शिक्षण करने हेतु प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है। इन्हें बी.एड प्रशिक्षक प्राप्त शिक्षक कहा जाता है।

द्वितीय प्रकार के शिक्षक वें हैं जिन्होंने प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्यापन हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किया है। ऐसे शिक्षकों को बेसिक शिक्षा प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है। इन्हें बी.टी0सी0 शिक्षक कहा जाता है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

बी0एड0 शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनत् भावी शिक्षक ऐसे कौशलों को विकसित करने में समर्थ हो जाते हैं जो कि किशोरवय शिक्षार्थियों में माध्यमिक स्तर पर वांछनीय अनुभवों को विकसित करने में सफलता प्राप्त करने के योग्य बन जाते हैं।

यह अधिकांश शोधार्थी और शिक्षक स्वीकार करते हैं कि दोनों स्तरों (माध्यमिक तथा प्राथमिक) पर शिक्षार्थियों की व्यक्तित्व विशेषताओं की विभिन्नता के कारण शिक्षको के शिक्षण कौशल व सम्प्रेषण कौशलता अलग–अलग प्रकार की होती है। प्रश्न तो यहाँ यह है कि क्या प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले बी.टी.सी. शिक्षक एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले बी.एड. शिक्षक दोनों की भिन्न–भिन्न शिक्षण प्रशिक्षण प्रारूपों के कारण शिक्षण प्रभावशीलता समान है ? क्या इनकी व्यक्तित्व विशेषताएँ जो शिक्षण को प्रभावित करती हैं, यथा सुविधास्तर, स्वधारणा, कार्यात्यक मूल्य, आकांक्षा स्तर समान हैं ? क्या इन दोनो स्तरों के शिक्षकों की परिस्थितियों भी समान है या नही ? यह एक ज्वलन्त प्रश्न है जिनका उत्तर ज्ञात करना शोधर्थिनी के लिए आवश्यक महसूस होता हैं। वर्तमान शोध का उद्गम शोधार्थिनी के मन में उपजे इन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने के लिए उद्गमित हुआ है और इसलिये बी. एड. एव ंबी.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की विशेषताओं का उनके व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका अध्ययन करने हेतु इस समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन :– निश्चित शब्दों में समस्या कथन को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

''कुमाँऊ मण्डल के बी.टी.सी. एव ंबी.एड शिक्षकों के आकांक्षा स्तर प्रभावशीलता, सुविधास्तर, स्वधारणा एवं कार्यात्मक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन''।

वर्तमान शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की परिभाषा निम्नवत हैः–

1. **ंबी.टी.सी :–** प्रत्येक जनपद में इस प्रकार के विद्यालय राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उत्तराखण्ड द्वारा नियंत्रित होते हैं। ंबी.टी.सी प्रशिक्षण जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) द्वारा संचालित द्वि–वर्षीय पाठ्यक्रम है। ंबी.टी.सी प्रशिक्षण प्राप्तकर्त्ता ंबी.टी.सी अर्हतायुक्त शिक्षक कहलाता है।
2. **बी0एड0 :–** माध्यमिक स्तर के लिए अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान खोले गये। प्रत्येक विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों में यह पाठ्यक्रम आयोजित किया गया है। बी0एड0 प्रशिक्षण राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (NCTE) द्वारा नियंत्रित होते हैं। वर्तमान समय में सरकारी तथा गैरसरकारी बी0एड0 महाविद्यालय स्थापित किए गए हैं। पहले यह प्रशिक्षण एक वर्षीय था, परन्तु वर्तमान समय में सरकार ने इसे द्वि–वर्षीय (चार सेमेस्टर) कर दिया है ताकि माध्यमिक स्तर पर कुशल एवं योग्य शिक्षको को प्रशिक्षित किया जा सके ।

3. **आकांक्षा स्तर : चौहान (1999)** ने आकांक्षा स्तर को परिभाषित किया कि ''आकांक्षा स्तर को परिभाषित किया कि'' आकांक्षा स्तर, किसी कार्य के उस स्तर से सम्बन्धित है जिसके लिए कोई व्यक्ति भविष्य के लिए आकांक्षा करता है। किसी व्यक्ति या समूह की क्रियात्मकता उसके आकांक्षा स्तर पर निर्भर करती है।''

कोई शिक्षक अपने वर्तमान शिक्षण स्तर को पाने के पश्चात् भावी प्रयास में जिस स्तर को प्राप्त करने की आशा रखता है, उा शिक्षक का आकांक्षा स्तर कहलाता है।

4. **सुविधा स्तर :** अपने शिक्षण कार्य व अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी सुविधाओं व असुविधाओं की मात्रा से शिक्षक अपने शिक्षण वातावरण में शिक्षण हेतु सुविधा महसूस करता है और यह सुविधा स्तर उसके कार्य प्रभाव को प्रभावित करता है। शिक्षक के सुविधा स्तर से तात्पर्य उस स्तर से है जिस स्तर पर शिक्षक अपने कार्य को सुचारू रूप से प्रतिपादित करने में सुविधा महसूस करता है।
5. **शिक्षक प्रभावशीलता –** शिक्षक प्रभावशीलता का सम्बन्ध उस शिक्षण प्रभाव से है, जो एक शिक्षक द्वारा उस शिष्य पर डाला जाता है, जिसे वह पढ़ाता है। शिक्षक प्रभावशीलता इसका मापन नहीं है, कि क्या करता है?, बल्कि इसका मापन है कि शिक्षक द्वारा पढ़ाये गये शिष्य के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुए हैं। शिक्षक प्रभावशीलता से वे निष्कर्ष सामले आते हैं, जिससे शिक्षा के उद्देश्य परिलक्षित होते हैं?
6. **स्वधारणा :–** स्व–धारण अर्थात किसी व्यक्ति की अपनी प्रकृति के बारे में अनुभव। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति दूसरों के विचारों, अनुभवों व पृष्ठपोषण से उनके बारे में क्या दृष्टिकोण रखता है। स्व–धारणा मूल्यों, अभिवृत्तियों व विचारों से बनने वाली अनुभव संरचना है।

   माथुर (1991) के अनुसा, ''एक व्यक्ति जिा प्रकार से अपना प्रत्यक्षीकरण करता है अथवा जिस ढंग से अपने को देखता है, उसे ही उस व्यक्ति की स्व–धारणा कहते हैं।''

7कार्यात्मक मूल्य :– बुड्स के अनुसार ''मूल्य मानव व्यवहार के घटक तथा निर्धारक तत्व है। ये आदर्श और लक्ष्य दोनों का कार्य करते हैं।''कार्यात्मक मूल्य का अर्थ उन मूल्यों से है जो किसी व्यक्ति द्वारा किऐ गये कार्य के आदर्श, लक्ष्य, गुणवत्ता या उस कार्य की सफलता से सम्बन्धित होते हैं।

शोध

समस्या का औचित्य (Rationale of the Problem):

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

यह सत्य है कि आज शिक्षक सामान्यतया अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट है। यद्यपि आज से कुछ वर्ष पहले जबकि शिक्षकों की दशा वास्तव में खराब थी, तब भी उनका व्यवहार इस तरह का नहीं था। वे छात्रों के भविष्य को प्राथमिकता देते थे तथा अध्यापक की गरिमा पूर्ण छवि बनाए रखते थे। वे समाज के सबसे आदरणीय पात्र थे। आज जबकि वेतन आकर्षक हो गया है, वे अन्य कार्यो में ज्यादा लिप्त पाए जाते हैं। जैसे–जैसे सुविधाएँ बढ़ती जा रही है, वैसे–वैसे तृष्णा का आकार भी बढ़ता जा रहा है। अन्य व्यवसायों की तरह आज का अध्यापक भी पैसे को अधिक महत्व देता है। आज वह बेचैन है तथा पुराने समय के गुरूओं से भिन्न है। वह आज नारेबाजी, रैली निकालने तथा लड़ाकू रूख अख्तियार करने में तनिक भी नहीं हिचकता। उसकी शान्तिप्रियता एक नकाब है, जिसे वह किसी भी क्षण हटा सकता है। इस वर्ग के कुछ लोग परीक्षा परिणामों में हेरा–फेरी करवाने, दलाली करने, स्थानान्तरण करवाने तथा लाभ के लिए राजनैतिक दलों से साँठ–गाँठ करने से नहीं चूकते हैं। ऐसे कामों को वे धनोपार्जन का अतिरिक्त साधन मानते हैं और यह भूल जाते हैं कि अध्यापक का सिर्फ और सिर्फ एक ही काम है– **''समाज को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करना।''** अगर आज की शिक्षा व्यवस्था पर उंगलियाँ उठ रही हैं तो अध्यापक का भी इसमें दोष है जिन्होंने कार्य सम्पादन में शिथिलता अथवा अशैक्षिक कठिनाईयाँ पैदा करके इस व्यवस्था को कमजोर किया है। संक्षेप में, आज का अध्यापक, समाज उसकी जो छवि देखना चाहता है, उसके अनुरूप बनने को कतई तैयार नहीं है। वर्तममान समय में बी0एड0 या बी0टी0सी0 करने के लिए लाखों रूपये खर्च करने के बाद जो भी व्यक्ति सरकारी अध्यापक बन जा रहा है, वह अध्यापक ज्ञान के विस्फोट के सत्य को स्वीकार करने को तैयार नहीं है और न ही अपनी शिक्षण सम्भावनाओं को मान रहा है। आज का अध्यापक येन–केन प्रकारेण अपनी सुविधानुसार विद्यालयों के चयन हेतु सदैव परेशान रहता है। शायद इसी कारण वह पठन–पाठन कार्य में या कक्षा में जाने में रूचि नहीं लेता । इस परिस्थिति में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आज का अध्यापक बदल गया है, पुराने मापदण्डों पर खरा नहीं बैठ पा रहा और वह बिना काम किये सफल डाक्टर के समान महत्वाकांक्षी है। आज का अध्यापक यह भूल रहा है कि आदर या पद कार्य से प्राप्त करना होता है, थोक के भाव नहीं मिलता । वह श्रेष्ठता प्राप्त करने का प्रयास ही नहीं कर रहा है। वह भूल गया है कि उसका भविष्य उसके ज्ञान एवं उसकी कार्यनिष्ठा में निहित है। कुछ विद्वानों का मत है कि समाज की शिक्षकों के नीति उपेक्षापूर्ण नीति भी शिक्षकों की दशा को दयनीय बनाने में महत्वपूर्ण कारक है। वेतन एवं अन्य सुविधाओं के बाद भी शिक्षक का जीवन समाज के अन्य लोगों की तुलना में खराब ही पाया जाता है। अच्छे स्कूलों, कॉलेजों या विश्वविद्यालयों में प्राथमिकता के आधार पर उनके बच्चों के प्रवेश का कोई इन्तजाम नहीं होता है। बच्चों को उच्च तकनीकी शिक्षा दिलानें में भी अपने को सामर्थ्यहीन महसूस करते हैं।

यद्यपि शिक्षक समाज में कुछ लोग अपने पथ से दिग्भ्रमित हुए है तथापि आज भी बहुत से ऐसे शिक्षक हैं जो अपने एवं अपने विद्याार्थियों के मूल्यों को पहचानते हैं तथा अपने कर्त्तव्यों एवं आदर्शो के प्रति समर्पित हों। अतः वर्तमान की आवश्यकता यह है कि युवा शिक्षक समाज जागृत हो, आकर्षक वेतनमान से अपने को सन्तुष्ट करें, अपने मूल्यों एवं आदर्शो के प्रति समार्पित हो और भ्रष्टाचार मुक्त, अवसाद मुक्त, संस्कार युक्त, नैतिकता युक्त, कर्त्तव्य युक्त, एवं कर्म युक्त छात्रों का निर्माण करें। निश्चित रूप से ऐसे अध्यापक ही अपने शिक्षार्थियों के प्रति अपने कर्त्तव्य निवर्हन के योग्य कहे जाएगें।

1.9. अध्ययन का महत्व (Importence of the Study) :-

अनुसंधान मानव ज्ञान भण्डार को विस्तृत करता है– अनुसंधान से मनुष्य का ज्ञान दिन प्रतिदिन बढ़ता रहता है क्योंकि अनुसंधान के आधार पर नवीन वैज्ञानिक तथ्यों, सामान्य नियमों तथा सिद्धान्तों की रचना होती है। पूर्व स्थापित सिद्धान्तों की पुनरावृत्ति होती है तथा नवीन उपकरणों तथा नवीन पद्धतियों द्वारा उसकी पृष्टि होती रहती है। अनुसंधान विभिन्न विज्ञानों की प्रगति की शक्तिशाली कुंजी है– अनुसंधान से भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, शिक्षा शास्त्र, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान आदि विज्ञानों के क्षेत्र में अपार उन्नति हुई है। अनुसंधान व्यावहारिक समस्याओं के समाधान का एक प्रबल यंत्र है– अनुसंधान व्यावहारिक समस्याओं के समाधान में सहायता करता है। आधुनिक जीवन के सामाजिक, औद्यौगिक,शैक्षिक, सैनिक, मनोवैज्ञानिक तथा चिकित्सा आदि क्षेत्रों में अनुसंधान की अत्यधिक उपयोगिता है, इसलिए सामाजिक अनुसंधान, औद्योगिक अनुसंधान तथा शैक्षिक अनुसंधान का विस्तार निरन्तर मानव जीवन में बढ़ रहा है। वास्तव में ग्रामीण समुदाय का जीवन स्तर ही देश का जीवन स्तर माना जाता है तथा इसी समुदाय की प्रगति सम्पूर्ण देश की प्रगति मानी जाती है। इस प्रगति के आधार पर भारत को उन्नत व ग्रामीण विकास के क्षेत्र को सार्थक बनाया जाना चाहिए और रचनात्मक कार्यो के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में बेकार पड़ी ग्रामीण समुदाय की अपार जनशक्ति और साधन का समुचित उपयोग किया जाना चाहिए। ऐसा करने से प्रत्येक ग्रामीण परिवार केवल अपना मानसिक, आर्थिक ,सामाजिक, शारीरिक एवं नैतिक विकास कर पाएगा बल्कि ग्रामीण समुदाय के विकास में भी अपना योगदान दे सकेगा। इसलिए कहा जा सकता है कि ग्रामीण समुदाय का यह विकास प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा काफी सम्भव है। इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन अति महत्वपूर्ण भूमिका अवश्य निभायेगा।

1.10 सम्बन्धित साहित्यावलोकन – (Reriew of Related Literature)

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से शिक्षकों के आकांक्षा स्तर, प्रभावशीलता कार्यात्मक मूल्य, स्वधारणा, व सुविधा स्तर से सम्बन्धित निम्न अध्ययन प्राप्त हुए हैं–

मुथा (1980) ने प्रभावी शिक्षकों की अभिवृत्ति व व्यक्तित्व का अध्ययन किया जिससे निम्न परिणाम प्राप्त हुए – (1) लिंग, व्यावसायिक प्रशिक्षण, स्कूल की प्रकृति व आमदनी स्तर का शिक्षक प्रभावशीलता से सार्थक सम्बन्ध पाया गया। (2) प्रभावी शिक्षकों का बुद्धि प्राप्तांक अप्रभावी शिक्षकों की तुलना में अधिक पाया गया। (3) प्रभावी शिक्षकों के चिन्ता, अभिरूचि, सैद्धान्तिक मूल्यों के प्राप्तांक अप्रभावी शिक्षकों की तुलना में उच्च पाये गये। (4) अप्रभावी शिक्षकों का राजनैतिक मूल्य प्राप्तांक प्रभावी शिक्षकों से अधिक पाया गया।

1. **वंगू एम.एल. (1984) ने**, हाई स्कूल शिक्षकों के प्रभावशीलता तथा व्यक्तित्व व विद्वता पूर्ण क्षमता का अध्ययन किया, जिसमें निष्कर्ष मिला कि व्यक्तित्व, समायोजन, प्रजातांत्रिक नेतृत्व, उच्चकोटि की बुद्धि व संवेगात्मक नियन्त्रण ही वे गुण हैं जिससे शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ती है।
2. **हुसैन एम.क्यू. (1985)** ने, हाई स्कूल शिक्षकों की कश्मीर में कर्तव्य निष्ठा का उनकी शैक्षिक प्रभावशीलता, शैक्षिक प्रभुत्व व नैतिकता से सम्बन्ध का अध्यय किया व निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।(निजी व सरकारी स्कूल शिक्षकों की नैतिकता, कर्तव्य निष्ठा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। (2) सरकारी व निजी स्कूल के गणित शिक्षकों की शैक्षिक प्रभुत्वता में सार्थक अन्तर मिला। (3) सरकारी व निजी स्कूलों के शिक्षकों की अंग्रेजी व गणित शिक्षण में अन्तर पाया गया। (4) सरकारी स्कूलों के शिक्षक निजी स्कूलों की अपेक्षा अधि प्रभावशाली थे। (5) निजी स्कूलों के अधिकांश शिक्षक निम्न प्रभुत्व वाले थे।
3. **सिंह आर0एस0 (1987) नें**, पूर्वी उत्तरप्रदेश में हाईस्कूल स्तर से सम्बन्धित शिक्षकों की प्रभावशीता का अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष प्राप्त हुए कि – (1) पुरूष और महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं था। (2) पुरूष व महिला शिक्षकों के औसत बुद्धि प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं था। (3) शिक्षक प्रभावशीलता में ग्रामीण महिला शिक्षकों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों से अधिक प्राप्तांक थे। (4) शहरी पुरूष व महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं था। (5) शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में ग्रामीण व शहरी, महिला व पुरूष शिक्षकों में सार्थक अन्तर नहीं था। (6) ग्रामीण महिला व पुरूष शिक्षकों के प्रभावशीलता प्राप्तांक, उनके बुद्धि, सामाजिक–आर्थिक स्तर व समायोजन से सार्थक रूप से सम्बन्धित थे।

4. **भासीन चंचल (1988) ने**, भी हायर सेकेण्डरी स्कूल शिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि व शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया और निम्न निष्कर्ष दिए– (1) शिक्षण अभिरूचि व शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया लेकिन इसका शिक्षक– समुदाय सहभागिता के साथ कोई सम्अन्ध नहीं था। (2) विज्ञान व मानव विज्ञान के शिक्षकों की शिक्षण अभिरूचियों में सार्थक अन्तर पाया गया। (3) ग्रामीण व शहरी : सरकारी वगैर सरकारी, पुरूष व महिला शिक्षकों के अनुसार उनकी अभिरूचि व प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

आकांक्षा स्तर सम्बन्धी अध्ययन :

1. **पन्नेर सेलवर,ए0 (1984) ने** "A study of Educational and Occupational Aspirations of parenys in a chosen Agricultural and Trstrial ommunity in the Tiruchappali District of Tamilnadu" विषय पर अध्ययन किया और अपने अध्ययन में पाया कि किसी समुदाय वाले परिवारों के बच्चों का आकांक्षा स्तर उनके माता–पिता के शिक्षा स्तर, पारिवारिक आय, व्यावसायिक जागृति ओर बच्चे के लिंग से प्रभावित है लेकिन परिवार के आकार, परिवार के प्रकार (एकल, सयुक्त) और पिता की आयु तथा बच्चे के जन्म क्रम का उसके आकांक्षा स्तर से सम्बन्ध नहीं पाया गया।
2. **सारस्वत, अनिल (1988) ने** "A Differential study of Achievement Mativation Occupational Aspiration and Acadeimic Achievement of Adoescents in different types of school climate in Aligarh District" विषय पर अध्ययन किया और पाया कि लड़के और लड़कियों, ग्रामीण एवं शहरी छात्र विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्र, सभी ऐ दूसरे से व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पर सार्थक रूप से भिन्न है। इन्होंने शैक्षिक उपलब्धि और व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने पर पाया ि कवह एक दूसरे से सम्बन्धित नहीं हैं।
3. **सिंह, एस0 (1990) ने** "Creative thinking in Relation to level of aspiration, DField Dependence and study habits among scheduled Castes and scheduled tribe students" विषय पर अध्ययन किया और पाया कि अनुसमचित जाति के छात्रों की सर्जनात्मकता और उनके आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं हैं तथा किसी भी प्रकार के छात्र की सर्जनात्मकता उसके आकांक्षा स्तर को प्रभावित नहीं करती है।
4. **कौर, डी0(1990)** ने "Educational and Vacational Aspirations of Students belonging to different socio-economic Locales of Jammu Oivision" विषय पर अध्ययन किया और अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यावसायिक

आकांक्षा दोनों छात्रों के सामाजिक, आर्थितर, उनके लिंग एवं उनके रहने के स्थान से प्रभावित होता है।

5. **नागर, रश्मि (1991) ने** उत्तरप्रदेश के गोरखपुर डिवीजन की शिक्षित लड़कियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षा का स्तर समस्त प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च स्तरों पर ग्रामीण एवं नगरीय लड़कियों की व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित करता है। ग्रामीण परिवेश वाली लड़कियां घरेलू व्यवसाय को अधिक महत्व देती है जबकि नगरीय/शहरी लड़कियां वैज्ञानिक क्षेत्र को अधिक महत्व देती हैं।

शिक्षकों की स्व–धारणा से सम्बन्धित अध्ययनः

1. **अग्रवाल, अर्चना (1992)** ने अनुसूचित जाति के छात्रों की हीनता का, सामाजिक–आर्थि स्तर, स्व–धारणा, व्यावसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में गैर–अनुसूचित जाति के छात्रों से अध्ययन किया तथा अनुसूचित जाति के छात्रों में उपर्युक्त चरों के सन्दर्भ में हीन पाया लेकिन अनुसूचित जाति व गैर अनुसूचित जाति के बच्चों में बुद्धिमता में कोई अन्तर पाया गया।
2. **क्रूज एवं केविन (1981)** ने शिक्षकों की स्व–धारणा के विकास के बारे में अध्ययन किया और पाया कि सकारात्मक स्व–धारण वाले शिक्षक अधिक प्रसन्न अधिक उत्पादक व एक शिक्षक के रूप में अपने कर्त्तव्यों के र्निवहन में अधिक चिन्तनशील हैं।
3. **ज्लेनेले हॉलपिन (1982)** द्वारा एक अध्ययन किया गया जिसका शीर्षक था, व्यक्तित्व विशेषताएँ एवं सेवा पूर्व शिक्षकों की स्व–धारण था। निष्कर्ष में पाया कि मानवतावादी शिक्षक संवेगात्मक रूप से स्वस्थ, औचित्यपूर्व, खुश व कल्पनाशील थे।
4. **तनेजा, एस.आ.(1988)** ने ''सुरक्षित एवं असुरक्षित शिक्षक–प्रशिक्षकों में सृजनात्मकता, स्व–धारण व हास्यरस विचारों के सम्बन्ध का अध्ययन किया व निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये–
    - सृजनात्मकता का स्व–धारण व हास्यरस विचारों में धनात्मक सम्बन्ध था लेकिन सुरक्षा की भावना से कोई सम्बन्ध नही पाया गया।
    - स्व–धारण का शिक्षक–प्रशिक्षकों की सुरक्षा भावना में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया।
5. **गणपति, एस.(1992)** ने छात्र–छात्राओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं स्व–धारणा का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष दिया कि पुरूष एवं महिला छात्र–शिक्षकों में धनात्मक स्व–धारणा पायी गई और इसका सम्बन्ध उनकी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति से पाया गया।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

शिक्षक कार्यात्मक मूल्य से सम्बन्धित अध्ययन :

1. **अब्दुल समद (1986)** ने चंडीगढ़ के राजकीस हाई–स्कूलों के संगठनात्मक वातावरण के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया ओर पाया कि –
   - महिला शिक्षिकायें पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थी।
   - 20–30 आयु वर्ग के शिक्षक उच्च आयु वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक असुतुष्ट थे।
   - कम अनुभवी शिक्षकों की व्यावसायिक संतुहष्ट का स्तर काफी कम था।
2. **श्री वास्तव,डी0एस0 (1986)** ने फैनाबाद मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि व व्यावसायिक ईमादारी का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार थे–
   - महिला शिक्षिकायें पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थी।
   - शहरी शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे।
   - युवा शिक्षक प्रौढ़ शिक्षाकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे।
   - शिक्षकों में व्यावसायिक ईमानदारी का स्तर व्यावसायिक संतुष्टि से उच्च पाया गया।
   - प्राथमिक शिक्षकों में असंतुष्ि के मुख्य कारण अपर्याप्त वेतन, भैतिक सुविधाओं का अभाव तथा अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न थे।
3. **अग्रवाल, के.सी.(1991)** ने प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करके निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये–
   - सामान्य वर्ग के शहरी तथा हिन्दी भाषी शिक्षक अधिक संतुष्ट थे।
   - पुरूष शिक्षक महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे।
   - एकल परिवार वाले अधिक संतुष्ट थे।
   - आर्थिक व राजनीतिक मूल्य व्यावसायिक संतुष्टि से सम्बन्धित पाये गये।
   - आयु व वैवाहिक स्थिति का व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव नहीं देखा गया।
4. **रावत (1992)** ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आँकांक्षाओं, व्यवसायिक संतुष्टि, व्यवसाय की सत्यता व मूल्य परिपाटी का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये–

- महिला तथा एल.टी. ग्रेड शिक्षक पुरूष अन्य शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे।
- व्यवसायिक संतुष्टि का सामाजिक व नैतिक मूल्यों से धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

5. **शर्मा, अनुराधा (1992)** ने अवने अध्ययन में पाया कि जो शिक्षक लोकतांत्रिक प्रवृत्ति वाले प्रधानाचार्य के साथ कार्य करते है, उनकी व्यावसायिक संतुष्टि व अध्ययन के प्रति परिणाम का स्तर उच्च था।

सुविधा–स्तर सम्बन्धी अध्ययन :– सुविधा–स्तर सम्बन्धी चर पर अध्ययन कम ही देखने को मिले हैं। इस चर पर एक प्रमुख अध्ययन प्रकाश में आया है जिसका संक्षिप्त उल्लेख निम्नवत् है–

शर्मा, प्रवीण कुमार (2013) ने अपने शोध अध्ययन विषय प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के आकांक्षा स्तर प्रभावशीलता व सुविधा–स्तर का तुलनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत यह निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक संस्थाओं में बी.टी.सी. शिक्षकों को प्रदान की जाने वाली सुविधायें सामान्य स्तर की हैं।

शोध समस्या का सीमांकन :–

वर्तमान शोध समस्या निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर सीमांकित है।

1. शोध समस्या का परिक्षेत्र मात्र उत्तराखण्ड राज्य तक ही सीमित है। अन्य राज्य इसके परिक्षेत्र में सम्मिलित नही किए गए हैं।
2. उत्तराखण्ड के दो मण्डलों में से शोध समस्या का अध्ययन मात्र कुमाँऊ मण्डल तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध कुमाँऊ मण्डल के छः जनपदों तक ही सीमित है। चयनित जनपद हैं। अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथोरागढ़, बागेश्वर, उधमसिंह नगर, चम्पावत।
4. छः जनपदों में शोध मात्र प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों के न्यादर्श तक ही सीमित है।
5. वर्तमान शोध मात्र दो प्रकार के शिक्षकों यथा – बी.एड. एवं बी0टी0सी0 शिक्षकों तक ही सीमित है।

शोध कार्य हेतु कुल 500 शिक्षकों का चयन किया गया जिनमें 250 बी0टी0सी0 एवं 250 बी.एड. शिक्षकों को लिया गया। वर्तमान शोध मात्र छः चरों यथा – शिक्षकों के आकांक्षा स्तर, शिक्षण प्रभावशीलता,स्वधारणा, विद्यालयों में उपलब्ध सुविधा स्तर तथा शिक्षकों

से कार्यात्मक मूल्यों तक ही सीमित है। इनके अलावा शिक्षकों के अन्य व्यक्तित्व अथवा अन्य शिक्षण सम्बन्धी घटक इस शोध समस्या में सम्मिलित नही किए गये हैं।

शोध के उद्देश्य

उपर्युक्त शोध समस्या के आलोक में शोधकर्त्री ने अपने शोध कार्य के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया है–

1. बी.एड. शिक्षकों की स्वधारणा, आकांक्षास्तर, कार्यात्मक मूल्यों, प्रभावशीलता एवं सुविधास्तर का अध्ययन करना।
2. बी.टी.सी. शिक्षकों की स्वधारणा, आकांक्षा स्तर, कार्यात्मक मूल्यों, प्रभावशीलता व सुविधास्तर का अध्ययन करना।
3. बी.एड. एव ंबी.टी.सी. शिक्षकों की स्वधारणा की तुलना करना।
4. बी.एड. एव ंबी.टी.सी. शिक्षको ं के आकांक्षा स्तर की तुलना करना।
5. बी.एड. एव ंबी.टी.सी. शिक्षको ं की शिक्षण प्रभावशीलता की तुलना करना।
6. बी.एड. एव ंबी.टी.सी. शिक्षकों के सुविधास्तर की तुलना करना।
7. बी.एड. एव ंबी.टी.सी. शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्यों की तुलना करना।
8. बी.एड. शिक्षकों की स्वधारणा, आकांक्षा स्तर, सुविधास्तर, प्रभावशीलता व कार्यात्मक मूल्यों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
9. ंबी.टी.सी शिक्षकों की स्वधारणा, प्रभावशीलता, सुविधास्तर, आकांक्षा स्तर, कार्यात्मक मूल्यों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायेंः– शोध अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के आलोक में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं निर्माण किया गया।

1. बी.एड. एव ंबी.टी.सी शिक्षकों की स्व–धारणा में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. बी.एड. एव ंबी.टी.सी शिक्षकों की आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. बी.एड. एव ंबी.टी.सी शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. बी.एड. एव ंबी.टी.सी शिक्षकों के सुविधास्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
5. बी.एड. एव ंबी.टी.सी शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. बी.एड.शिक्षकों की स्वधारणा, आकांक्षा स्तर, सुविधास्तर प्रभावशीलता व कार्यात्मक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।
7. ंबी.टी.सी शिक्षकों की स्वधारणा प्रभावशीलता, सुविधास्तर, आकांक्षा स्तर व कार्यात्मक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

3.4 शोध विधि एवं प्रक्रिया–

शोध उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोध विधि का चयन करने के उपरान्त द्वितीय परिप्रेक्ष्य में शोध प्रविधियों का चयन करना था। शोधार्थिनी ने इस परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग किया है–

1. निरीक्षण
2. साक्षात्कार
3. परीक्षण
4. सांख्यिकीय तकनीकियाँ

1. निरीक्षण– निरीक्षण तकनीकी का प्रयोग शोधार्थिनी ने प्राथमिक संस्थाओं में प्रयुक्त दृश्य–श्रव्य सामग्रियों, शिक्षण कक्ष की विशेषताओं, शिक्षकों के पारस्परिक सम्बन्धों, शिक्षक तथा छात्रों के सम्बन्धों की धनात्मकता एवं उष्णता, शिक्षण विधियों के प्रयोग, छात्रों के निर्देशन हेतु प्रयुक्त तकनीकियां, खेल उपकरण एवं खेल का मैदान, प्रधानाध्यापक व शिक्षकों के पारस्परिक सम्बन्धों का अनौपचारिक रूप से न्यादर्श के लगभग एक प्रतिशत प्राथमिक संस्थाओं के न्यादर्श में इस तकनीकी का प्रयोग किया है। यह कहना अनावश्यक है कि निरीक्षण की समस्त प्रक्रिया अनौपचारिक थी। निरीक्षण के समय न तो छात्रों को, न ही शिक्षकों, न ही प्रधानाध्यापक को यह ज्ञात हो पाया कि शोधार्थिनी यह क्रिया कर रही है और किस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कर रही है।

2. साक्षात्कार– साक्षात्कार विधि का प्रयोग शोधार्थिनी ने शिक्षकों से प्राथमिक शिक्षा संस्था सम्बन्धी प्रश्नों के द्वारा किया। आमने–सामने प्रश्नोत्तर रूप में उसने संस्था के प्रधानाध्यापक, अन्य शिक्षकगण, छात्रों के दृष्टिकोण को पुनः जानने का प्रयास किया यह कहना यहाँ पर अनावश्यक है कि साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग उन्हीं प्राथमिक तथा माध्यमिक संस्थाओं में किया गया जहाँ शोधार्थिनी द्वारा निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया था।

3. परीक्षण– इस प्रविधि का प्रयोग न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षकों यथा–बी.एड्. तथा बी.टी.सी. अर्हता युक्त शिक्षकों की पाँचों विशेषताओं यथा– स्व–धारणा, आकांक्षा स्तर, सुविधा स्तर, प्रभावशीलता व कार्यात्मक मूल्यों के स्तर को ज्ञात करने में किया जाएगा।

शोध के अग्रिम पाँच उद्देश्यों (शोध उद्देश्य– 3 से 6) में बी.एड्. तथा बी.टी.सी. शिक्षकों की उपरोक्त विशेषताओं की तुलना शोधर्थिनी ने t–परीक्षण तकनीकी द्वारा की है। प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा में कार्यरत दोनों प्रकार के शिक्षकों की प्रत्येक विशेषताओं में अन्तर ज्ञात करने

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

के लिए z– परीक्षण, χ^2–परीक्षण आदि का भी प्रयोग किया जा सकता था, परन्तु इस शोध में t–परीक्षण का प्रयोग करने का विशिष्ट कारण, शिक्षकों के न्यादर्श के आकार का अधिक बड़ा होना है। तृतीय कारण यह भी है कि χ^2–परीक्षण तभी किया जाता है, जब परिकल्पना में कल्पनाएं इस प्रकार निर्मित होतीं कि उनके एक भाग में भविष्यवाणी (Prediction) होती तथा द्वितीय भाग में वास्तविक विशेषता स्तर होता। तदोपरान्त इन दोनों में अन्तर ज्ञात करना होता। स्पष्ट है कि वर्तमान शोध में न तो भविष्यवाणी सम्बन्धी अंश हैं और न ही यथार्थ माध्य का स्थान है। अतः उपरोक्त परिस्थितियों में t–परीक्षण ही ऐसी सांख्यिकीय विधि थी, जिसके द्वारा बी.एड्. तथा बी.टी.सी. शिक्षकों से सम्बन्धित पाँचों विशेषताओं के अन्तर को ज्ञात करना अधिक वैध था, अतः इस तथ्य को दृष्टिगत कर शोधार्थिनी ने t–परीक्षण का प्रयोग करना ही अधिक उपयुक्त समझा और इसी सांख्यिकीय विधि का इस शोध में प्रयोग किया गया है।

अन्तिम दोनों शोध उद्देश्यों (8व9) में मात्र एक ही सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग करना सम्भव था। स्पष्ट है कि यह विधि सह–सम्बन्ध ही है। अन्तिम दोनों उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सहसम्बन्ध तकनीकी का प्रयोग वर्तमान शोध में किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में शोधार्थिनी द्वारा प्रयुक्त मध्यमान, मानक विचलन, t–परीक्षण तथा सह–सम्बन्ध को करने हेतु क्रमशः निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग किया गया है–

(1) मध्यमान का सूत्र–

$$\text{मध्यमान } M = \frac{\sum X}{N}$$

जहाँ, M = मध्यमान

$\sum X$ = प्राप्तांकों का योग

N = आवृत्तियों की संख्या (समूह का आकार)

(2) मानक विचलन का सूत्र

$$\text{मानक विचलन } (\sigma) = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$$

जहाँ– d = प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन

$\sum d^2$ = मध्यमान से लिए गए विचलनों के वर्गों का योग

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

N = प्राप्तांकों की संख्या

(3) t–परीक्षण का सूत्र–

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma^2_1}{N_1} + \frac{\sigma^2_2}{N_2}}}$$

जहाँ– M_1= पहले समूह का मध्यमान

M_2= दूसरे समूह का मध्यमान

σ_1= पहले समूह का मानक विचलन

σ_2= दूसरे समूह का मानक विचलन

N_1= पहले समूह की संख्या

N_2= दूसरे समूह की संख्या

(4) सहसम्बन्ध का सूत्र–

$$\text{सहसम्बन्ध } \gamma = \frac{\sum xy}{\sqrt{\sum x^2 . \sum y^2}}$$

r = सह–सम्बन्ध गुणांक

जहाँ– x और y =वास्तविक मध्यमान से विचलन

$\sum xy$ = x विचलन और y विचलन के गुणनफल का योग

$\sum x^2$ = मध्यमान से x प्राप्तांकों के विचलन के वर्गों का योग

$\sum y^2$ = मध्यमान से y प्राप्तांकों के विचलन के वर्गों का योग

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

प्रस्तुत अध्ययन में दो चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की व्याख्या इसके गुणांक की मात्रा से की गई। गुणांक की मात्रा से दो चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की घनिष्टता का बोध होता है। सम–सहसम्बन्ध गुणांक 1.00 के जितना समीप होगा, दो चरों के मध्य सह–सम्बन्ध उतना ही घनिष्ट होगा, इसके विपरीत यह गुणांक 1.00 से जितना दूर होगा, सह–सम्बन्ध उतना ही कम होगा। गिलफोर्ड ने सह–सम्बन्ध गुणांक की मात्रा का आधार पर सह–सम्बन्ध को निम्नांकित श्रेणियों में वर्गीकृत किया है।

गुणांक की मात्रा (Coefficient)	सह–सम्बन्ध (Coefficient)
00 से ± 0.20 तक	नगण्य (Negligible)
± 0.20 से ± 0.40 तक	निम्न (Low, Slight)
± 0.40 से ± 0.60 तक	सामान्य (Moderate)
± 0.60 से ± 0.80 तक	उच्च (High)
± 0.81 से ± 0.99 तक	अति उच्च (Very High)
± 1.00	पूर्ण सह–सम्बन्ध (Perfect Corretetion)

शोध उपकरण :– शोध अध्ययन में निम्नाकिंत शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. आकांक्षा स्तर हेतु डॉ. ऊषा जौहर निर्मित आकांक्षा मापनी ।
2. शिक्षक प्रभावशीलता – डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डॉ0 डी.एन मुथा।
3. स्वधारणा डॉ0 आशा शर्मा एवं डॉ0 श्रीकान्त मौर्य ।
4. कार्यात्मक मूल्यों के मापन हेतु डॉ0 सीमा संधी।
5. शिक्षा संस्था सुविधाएँ हेतु – डॉ0 के0जी0शर्मा ।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :– कुमाँऊ मण्डल के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत लगभग (54487) शिक्षकों पर उपर्युक्त पॉच शोध उपकरणों का प्रशासन कठिन कार्य था और न्यादर्श काफी बड़ा व जटिल होने की सम्भावना थी, जिसमें शोध कार्य करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए शोधकर्त्ती ने प्रत्येक जिले से एक विकासखण्ड का चयन अनियमित प्रतिचयन की लाटरी विधि द्वारा किया। इस विधि के

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

प्रयोग से शोधकर्त्री ने जनपद वार एक–एक विकास खण्ड का चयन किया है। उन विकासखण्डों में स्थित प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों का चयन भी लाटरी विधि द्वारा किया गया, क्योंकि एक विकासखण्ड में प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की संख्या एवं शिक्षकों की संख्या अधिक थी। इस प्रकार कुल 250 बी.टी0सी0 एवं 250 बी0एड0 शिक्षकों का चयन किया गया है।

आँकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण :– शोधकर्त्री को पॉचों शोध उपकरणों के प्रशासन में लगभग 2–3 माह का समय लगा, क्योंकि क्षेत्र काफी विस्तृत था। प्राथमिक विद्यालयों का दुर्गम स्थान में होना यातायात की सुविधा भी सरल नही थी, इस कारण शोधकर्त्री ने शोध उपकरणों के प्रशासन में समय चक्र एवं तिथिवार का निर्माण किया।

- शोधकर्त्री प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियाँ माध्य, मानक विचलन, टी–मूल्य, सहसम्बन्ध गुणांक आदि के आधार पर करने के पश्चात शोध परिणामों की व्याख्या एवं निष्कर्षो को प्रस्तुत किया है। इससे सम्बन्धित सारणियों को यथास्थान अध्यायक्रम में दिया गया है।

शोध निष्कर्ष :–

1. बी.टी0सी0 शिक्षको की स्वधारणा का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता, सुविधास्तर, आकांक्षास्तर तथा कार्यात्मक मूल्यों से महत्वपूर्ण सह–सम्बन्ध है।
2. उपर्युक्त चरो में सह–सम्बन्ध की मात्रा .0041** से लेकर .1014 तक की परिसीमा में है।
3. बी.टी.सी. शिक्षकों की स्वधारणा का सर्वाधिक सह–सम्बन्ध (r=.1014**) आकांक्षा स्तर से है।
4. बी0टी0सी0 शिक्षकों की स्वधारणा का न्यूनतम सह – सम्बन्ध (r=-.0116) कार्यात्मक मूल्य से है।
5. बी0टी0सी0शिक्षकों की स्वधारणा का उनके आकांक्षा स्तर से नगण्य धनात्मक सम्बन्ध है। (.1014**)
6. बी0टी0सी0शिक्षकों की स्वधारणा का सुविधा स्तर एवं शिक्षण प्रभावशीलता से नगण्य ऋणात्मक सह – सम्बन्ध है।
7. बी0टी0सी0शिक्षकों की प्रभावशीलता का स्वधारणा , सुविधा स्तर , आकांक्षा सतर एवं कार्यात्मक मूल्यो से नगण्य ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।
8. बी0टी0सी0शिक्षकों की सुविधा स्तर का स्वधारणा, शिक्षण प्रभावशीलता, आकांक्षा स्तर और कार्यालय मूल्यों में नगण्य ऋणात्मक सह–सम्बनध है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त सभी चरों (स्वधारणा, शिक्षण प्रभावशीलता, सुविधा सतर , आकांक्षा स्तर कार्यात्मक मूल्यों) में ± नगण्य सह–सम्बन्ध पाया गया है। दोनों वर्गों बी0एड0 एवं बी0टी0सी0 शिक्षकों पर उपर्युक्त चरो का प्रभाव बहुत अधिक नहीं है। सभी चर एक दूसरे में ± नगण्य सह–सम्बन्ध रखते हैं। सामान्यीकरण रूप में निष्कर्ष निकलता है कि शोध में प्रयुक्त सभी चरों में धनात्मक या ऋणात्मक सह – सम्बन्ध है।

शैक्षिक निहितार्थ :– किसी भी उद्देश्यपूर्ण कार्य के निहितार्थ आवश्यक होते है क्योंकि कार्य की सार्थकता उसके निहितार्थ से आँकी जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के बी0एड0 एवं बी0टी0सी0 शिक्षकों की स्वधरणा, आकांक्षास्तर, सुविधास्तर, प्रभावशीलता एवं कार्यात्मक मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। अतः शोध अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधानाचार्य, संस्था प्रबंधकों हेतु निहितार्थ रख सकते हैं।

शोधकर्त्री द्वारा किए गए शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ को अग्रांकित रूप से प्रस्तुत किया गया है।

1. **विद्यार्थी हेतु** :– एक विद्यालय का केन्द्र विद्यार्थी होता है। विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। जब शिक्षक प्रभावशाली ढंग से शिक्षण करते हैं तो विद्यार्थी की स्वधारणा और आकांक्षास्तर उच्च होती है जिससे कार्यात्मक मूल्यों में वृद्धि होती है। सुविधा प्रदत्त शिक्षण शैली विषय में रूचि उत्पन्न करती है।
2. **शिक्षक हेतु** :– किसी राष्ट्र के विकास में शिक्षक की अहम भूमिका होती है शिक्षा की गुणवत्ता में शिक्षक के शिक्षण की भूमिका होती है। एक शिक्षक विद्यार्थियों का सवार्गीण विकास करने में सहायक होता है परन्तु यह भी शिक्षक की शिक्षण प्रक्रिया पर निर्भर करता है। शोध अध्ययन मे पाया गया कि प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षक शिक्षण में विभिन्न चरों का प्रयोग करते हैं। शिक्षण कौशलों के प्रयागे द्वारा वे स्वयं में परिवर्तन लाकर विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को बेहतर बना सकते हैं और अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकते है।

3.प्रधानाचार्य हेतु :– प्रधानाचार्य संस्था का संचालक होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा वे शिक्षकों की शिक्षण शैली को जान पायेंगे। प्रधानाचार्य समय–समय पर शिक्षकों का मूल्यांकन कर शिक्षको के प्रति जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। समय–समय पर विद्यालयों में कार्यशाला, गोष्ठी, आदि आयोजित करायी जानी चाहिए जिससे शिक्षको में स्वधारणा, आकांक्षा स्तर एवं कार्यात्मक मूल्यों का विकास हो सके, साथ ही शिक्षक सुविधा स्तर को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाया जा सकता है बशर्ते विद्यालय शिक्षकों को आधारभूत उपलब्ध कराये।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

4.स्कूल प्रबन्धकों हेतु :– स्कूल प्रबन्ध के सहयोग के बिना शिक्षक व प्रधानाचार्य स्कूल को प्रगति पद पर अग्रसर नही कर सकते । कई दृष्टिकोण से स्कूल प्रबन्धन का सहयोग विद्यालय व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में अनिवार्य समझी जाती है। स्कूल प्रबन्धन हठधर्मिता, पक्षापातपूर्ण रवैया, अनेक ऐसे कारण है जो शिक्षक व प्रधानाध्यापक को अपनी पूर्ण निष्ठा व मेहनात से कार्य करने में बाधक सिद्ध होते है। अतः यह शोध अध्ययन उन्हें यह कर्त्तव्यबोध कराता है कि उन्हें भी विद्यालय को प्रगति शिखर पर आरूढ़ करने हेतु तन–मन,धन से सहयोग करना होगा।

भावी शोध हेतु सुझाव :– प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के फलस्वरूप नवीन पक्ष तथा कुछ प्रश्न भी उभरे है, जिनके उत्तर प्राप्त करना भावी शोध का विषय हो सकते हैं ये सम्भावनाएँ निम्न हो सकती हैं–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में कुमाँऊ मण्डल के बी0एड0 एवं बी0टी0सी0 शिक्षकों की स्वधारणा, आकांक्षा स्तर, प्रभावशीलता, सुविधास्तर, कार्यात्मक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त गढ़वाल मण्डल में भी यह शोध किया जा सकता है।
2. उच्च शिक्षा में कार्यरत् शिक्षको की स्वधारणा, आकांक्षा स्तर, सुविधास्तर, प्रभावशीलता एवं कार्यात्मक मूल्यों का भी अध्ययन किया जा सकता हैं।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की विभिन्न व्यक्तित्व विशेषकों (स्वधारणा, आकांक्षास्तर, सुविधा स्तर, प्रभावशीलता, कार्यात्मक मूल्य) के सन्दर्भ में किया गया है। भावी शोध कार्य इनके अतिरिक्त शैक्षिक योग्यता, शिक्षण अनुभव, शिक्षण दक्षता, सृजनात्मकता, व्यक्तिगत कारक आदि के सन्दर्भ में भी किये जा सकता हैं।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने कुमाँऊ मण्डल के 6 जिलों के एक ब्लाक को चयनित किया भविष्य में न्यादर्श को विस्तृत स्वरूप प्रदान कर अधिक ब्लॉकों को सम्मिलित कर शोध किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अतः किसी अन्य प्रविधि का उपयोग करते हुए इस अध्ययन के निष्कर्षो की जॉच की जा सकती हैं।
6. प्रदत्त संकलन हेतु चयनित विद्यालयों (प्राइमरी/माध्यमिक) का चयन अनियमित प्रतिचयन लाटरी विधि द्वारा किया गया। यही शोध प्रतिचयन की अन्य विधियों का प्रयोग करके भी किया जा सकता है।
7. उच्च माध्यमिक स्तर या विभिन्न विषयों के शिक्षको की स्वधारणा, आकांक्षा स्तर सुविधास्तर, प्रभावशीलता एवं कार्यात्मक मूल्यों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एलिस, माइल्स एवं रिचार्डए लिन्ने (2012), "Teaching the way we aspire to teach : Now and in the Future" Report, The Canadian Education Association

(CEA) and the Canadian Teacher's Federation (CTF), 2490 Don Reid Drive, Ottawa On K1H1E1, website: www.cea.ace.ca and www.ctf.fce.ca

अग्रवाल, जे0सी0 (2009), ''शैक्षिक तकनीकी तथा प्रबन्ध के मूल तत्व'', अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, कुल पृष्ठ संख्या 424.

आनन्द, एस0पी0 (1998), ''प्राथमिक स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रेरणा का अध्ययन'', Indian Education Review – Vol 33(1) 117-131 in IEA, NCERT, New Delhi, vol. 1, Number 2, July 2001.

अत्रेय, जयशंकर (1989), '' शिक्षकों की प्रभावशीलता का डिग्री कॉलेज स्तर पर अध्ययन'', पी0एच0–डी0 (एजूकेशन), आगरा विश्वविद्यालय, एम0बी0बुच फिफ्थ सर्वे, वोल्यूम सेकेण्ड (1988–1992)

अब्दुल समद (1986), ''चंडीगढ़ के राजकीय हाई स्कूलों के संगठनात्मक वातावरण के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'', (आयु स्तर के आधार पर विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन, शोध प्रबन्ध, एम0फिल0, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)।

डॉ0जी0 संगीता (2011), ''कॉलेज शिक्षकों की उनकी व्यावसायिक संतुष्टि के संबंध में शिक्षण प्रभावशीलता'', जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 6, नं0 1 जून 20011।

भटनागर, डॉ0 ए0बी0 एवं भटनागर, डॉ0 अनुराग (2011), ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली'', आर लाल बुक डिपो, मेरठ, कुल पृष्ठ संख्या 298।

भटनागर, डॉ0 ए0बी0 (2007), ''भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, कुल पृष्ठ संख्या 488।

बाजपेयी, अमिता और कन्नौजिया, आरती (2007), ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 26, अंक– 1, जनवरी–जून 2007, लखनऊ।

भसीन, चंचल (1988), ''हायर सेकेण्डरी स्कूल शिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि व इसका शिक्षण प्रभावशीलता से सम्बन्ध'', पी–एव0डी0 (एजूकेशन), रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, एम0बी0बुच फिफ्थ सर्वे, वोल्यूम सेकेण्ड (1988–1992)।

भटनागर, जे0एन0 (1979), ''एन इन्वेस्टिगेशन इन टू द वैल्यू एस्पीरेशन एण्ड पर्सनालिटी ट्रेंड्स ऑफ राजस्थान'' एम0बी0बुच, थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ संख्या 333।

छाया (1994), ''प्रभावी व अप्रभावी शिक्षकों के व्यक्तित्व समायोजन शिक्षण अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'', (''मेरठ शहर के अनुदानित एवं गैर–अनुदानित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक–अध्यापिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मे अध्ययन'', लघु शोध प्रबन्ध, आई0आई0एम0टी0 कॉलेज ऑफ एजूकेशन, मेरठ)।

दवे, शैली (2006), ''उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति तथा प्रभावशीलता का अध्ययन'', भारतीय शोध पत्रिका, वोल्यूम (14) (1)।

गुप्ता, डॉ0एस0पी0 एवं गुप्ता डॉ0 अलका (2008), ''सांख्यिकीय विधियाँ'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, कुल पृष्ठ संख्या 676।

गुप्ता, सुशील प्रकाश (1995), शिक्षकों की कार्यत्मक संतुष्टि व शिक्षण प्रभावशीलता के सह–सम्बन्ध का अध्ययन'', The progress of Education , Vol. XIX (10) (207-208), in IEA, NCERT,New Delhi, Issue – 4 January 1998.

गणपति , एस0 (1992), ''छात्र–शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं स्वधारणा का अध्ययन'', M.Phil, Edu. Madurai Kamaraj Univ, in Buch M.B Vth Surey Vol. II'\, (1988-1992).

ग्रोवर, एस0 (1979), ''पैरेन्टल एस्पीरेशन ऐज रिलेटेढ टू पर्सनालिटी एण्ड स्कूल एचिवमेन्ट पी0एच0–डी0 (साइकोलॉजी) पैन यूनिवर्सिटी।

गुप्ता, ए0 (1979), ''ए साइकोलाजिकल इस्ट्रेस रिलेटेड टू लेवल ऑफ एस्पीरेशन एण्ड एचिवमेन्ट मोटीवेशन'' एम0बी0 बुच, थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ संख्या 354।

हेन्सन, जना मैरी (2013), ''Understanding graduate school aspirations : The effect of good teaching practice** Ph.D.. (Edu.) Graduate College, University of IOWA.

केरसे, रैकेल जैकसन (2013), "A Motivation in physical education: Relationship with physical self-concept and teacher rating of attainment", European Physical Education Review, 2 Aug. 2013 Loughborough University, Leicestershire, UK.

कन्नोजिया, आरती (2006), विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय में नियुक्ति के प्रति उनके दृष्टिकोण का एक अध्ययन'', (आयु स्तर के आधार पर विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन, शोध प्रबन्ध, एम0फिल0, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)।

कटारा, मनोरमा और भारद्वाज,सुपर्ण (1999), ''प्राथमिक विद्यालय में कक्षा–कक्ष की स्थिति का शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार का अध्ययन'', Indian journal of Psychometry and Edu. Vol.30(1), 9-18, in IEA, NCERT, New Delhi.

कौर, डी0 (1990), ''एजूकेशनल एण्ड वोकेशनल एस्पीरेशन्स ऑफ स्टूढेन्ट्स बिलांगिंग टू डिफरेन्ट सोशियो इकोनामिक लोकल्स ऑफ जम्मू डिवीजन'' पी0एच0–डी0 एजूकेशन यूनिवर्सिटी ऑफ जम्मू।

कुमारी, एस0 (1981), ''सेल्फ एस्टीम एण्ड एस्पीरेशन एसज फैक्टर्स एफेक्टिव रिस्क टेकिंग बिहैहवयर एमांग डेवियन्ट एडोलसेन्टस'' पी0एच0–डी0 साइकोलॉजी आगरा यूनिवर्सिटी।

लाल, रमन बिहारी (2012), ''भरतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें'', रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ संख्या 333

लतीफा गेम व धार्मगंदन (2000) ''केरल के विद्यालयों में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन'', (आयु स्तर के आधार पर विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की व्यावसायिक

संतुष्टि का अध्ययन, शोध प्रबन्ध, एम0फिल0, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)।

मर्फी, एल0 डेनियल (2012), "Value-added models in the evaluation of teacher effectiveness : A comparison of models and outcomes", Research Report, Yuanyuan. Mc Bride, May 2012

मलिक, डॉ0 उमेन्द्र (2009), ''यू–लर्निंग : कॉन्सेप्ट, होमवर्क एवं डिफरेन्ट पर्सपेक्टिव इन एजूकेशन'', पी0एच0–डी0 (एजूकेशन), एम0डी0 विश्वविद्यालय, रोहतक, जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 6,नं0 1, जून 2011 ।

मंगल, एस0के0 एवं श्रीमति शुभ्रा मंगल (2007), ''शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन'', लायल बुक डिपो, मेरठ, कुल पृष्ठ संख्या 344

माथुर, एस0एस0 (2001), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, नवीनतम् संस्करण, कुल पृष्ठ संख्या 697

मेमन, पी0एन0 (1982),''परफरमेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स आन पालिटेकनिक्स इन रिलेशन टू देयर एकेडमिक एचिवमेन्ट्स, इनटेलिजेन्स डिफरेन्सियल एटीट्यूटस एडजस्टमेन्ट्स एण्ड एस्पीरेशन लेवल'' एम0बी0 बुच, थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ संख्या 674

मुथा, डॉ डी0एन0 (1980), ''प्रभावशाली एवं अप्रभावशाली शिक्षकों में अन्तर करने वाले अभिवृत्ति प्रेरक एवं व्यक्तित्व की पहचान का अध्ययन'', पी–एच0डी0 साइकोलॉजी, जोधपुर विश्वविद्यालय, एम0बी0बुच थर्ड सर्वे, वोल्यूम सेकेण्ड (1978–1983)